Ancient Vedic Mantras and Rituals

Shrimad Bhagavad Gita Chapter–3 Shalok–40 | श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय तीन–श्लोक चालीस | PDF

अध्याय 3 – कर्म योग
श्लोक 40
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते ।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम् ॥40॥
सरल हिंदी में भावार्थ

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं–

हे अर्जुन! इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि काम (इच्छा) के निवास स्थान माने जाते हैं। इन्हीं के माध्यम से काम जीवात्मा के ज्ञान को ढककर उसे मोह में डाल देता है और सत्य से विमुख कर देता है।

विस्तृत व्याख्या

काम के निवास स्थान

इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण बताते हैं कि काम (अनियंत्रित इच्छा) बाहर से नहीं आता, बल्कि उसका प्रभाव मनुष्य की इन्द्रियों, मन और बुद्धि में प्रकट होता है।

यही तीनों स्थान ऐसे हैं जहाँ से इच्छा उत्पन्न होती है और धीरे-धीरे मनुष्य के विचार तथा व्यवहार को प्रभावित करने लगती है।

इसी कारण साधक को सबसे पहले इन्हीं पर नियंत्रण स्थापित करना आवश्यक है।

इन्द्रियाँ – इच्छा का प्रथम द्वार

इन्द्रियाँ बाहरी विषयों के संपर्क में आती हैं।

जब मनुष्य बार-बार आकर्षक विषयों को देखता, सुनता या अनुभव करता है, तब उनके प्रति आसक्ति उत्पन्न होने लगती है।

यही आसक्ति आगे चलकर काम का रूप धारण कर लेती है।

इसलिए इन्द्रिय संयम आध्यात्मिक जीवन की पहली आवश्यकता है।

मन और बुद्धि पर काम का प्रभाव

मन इच्छाओं को स्वीकार करता है और उन्हें बार-बार सोचकर मजबूत बनाता है।

यदि बुद्धि विवेकपूर्वक निर्णय न ले, तो मनुष्य सही और गलत का भेद खो देता है।

काम पहले मन को विचलित करता है और फिर बुद्धि को भ्रमित कर देता है।

फलस्वरूप मनुष्य अपने वास्तविक आत्मस्वरूप और जीवन के उद्देश्य को भूल जाता है।

ज्ञान पर मोह का आवरण

भगवान कहते हैं कि काम ज्ञान को ढक देता है।

जब ज्ञान ढक जाता है, तब मनुष्य अस्थायी सुखों को ही वास्तविक सुख समझने लगता है।

मोह के कारण वह बार-बार उन्हीं विषयों में उलझता रहता है जो अंततः दुःख का कारण बनते हैं।

यही अज्ञान संसार के बंधन का मूल कारण है।

कर्मयोग की दृष्टि

कर्मयोग सिखाता है कि इन्द्रियों, मन और बुद्धि को ईश्वर की ओर लगाना ही काम पर विजय का सर्वोत्तम उपाय है।

जब मनुष्य अपने कर्म निष्काम भाव से करता है, इन्द्रियों को संयमित रखता है और बुद्धि को धर्म तथा विवेक से संचालित करता है, तब काम का प्रभाव धीरे-धीरे समाप्त होने लगता है।

ऐसी अवस्था में ज्ञान पुनः प्रकाशित होता है और मनुष्य आत्मिक शांति का अनुभव करता है।

मुख्य बिंदु

- काम का निवास स्थान इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि हैं।
- इन्हीं के माध्यम से काम मनुष्य को मोह में डालता है।

- काम ज्ञान को ढककर विवेक को कमजोर कर देता है।
- इन्द्रिय संयम आध्यात्मिक उन्नति का आधार है।
- मन और बुद्धि को शुद्ध रखना आवश्यक है।
- निष्काम कर्म और आत्मसंयम से काम पर विजय प्राप्त की जा सकती है।
- ज्ञान का प्रकाश मोह को समाप्त कर देता है।

गूढ़ आध्यात्मिक अर्थ

यह श्लोक बताता है कि मनुष्य का सबसे बड़ा संघर्ष बाहरी संसार से नहीं, बल्कि अपनी इन्द्रियों, मन और बुद्धि के भीतर उत्पन्न होने वाली इच्छाओं से है।

जब ये तीनों शुद्ध और नियंत्रित रहते हैं, तब आत्मज्ञान सहज रूप से प्रकाशित होता है।

किन्तु यदि काम इन पर अधिकार कर ले, तो मनुष्य सत्य को भूलकर मोह और आसक्ति में फँस जाता है।

भगवान श्रीकृष्ण सिखाते हैं कि आत्मसंयम, निष्काम कर्म, भक्ति और निरंतर साधना के द्वारा इन्द्रियों, मन और बुद्धि को शुद्ध किया जा सकता है। तब ज्ञान का प्रकाश पुनः प्रकट होता है और साधक आत्मशांति, आत्मज्ञान तथा अंततः मोक्ष की ओर अग्रसर होता है।

पदों का भावार्थ

इन्द्रियाणि – इन्द्रियाँ

मनः – मन

बुद्धिः – बुद्धि

अस्य – इस (काम) का

अधिष्ठानम् – निवास स्थान

उच्यते – कहा जाता है

एतैः – इन्हीं के द्वारा

विमोहयति – मोह में डालता है

एषः – यह (काम)

ज्ञानम् – ज्ञान

आवृत्य – ढककर

देहिनम् – देहधारी जीव को

श्लोक का संदेश

भगवान श्रीकृष्ण बताते हैं कि काम (अनियंत्रित इच्छा) का प्रभाव इन्द्रियों, मन और बुद्धि के माध्यम से कार्य करता है। यही काम ज्ञान को ढककर मनुष्य को मोह और भ्रम में डाल देता है।

इसलिए इन्द्रिय संयम, मन की शुद्धि, विवेकपूर्ण बुद्धि, निष्काम कर्म, भक्ति और निरंतर साधना के द्वारा इस आंतरिक शत्रु पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। तभी आत्मज्ञान का प्रकाश प्रकट होता है और मनुष्य शांति, आत्मशुद्धि तथा अंततः मोक्ष की प्राप्ति करता है।

RELATED ARTICLE

Chapter–3 Shalok–38

Chapter–3 Shalok–39

THANKS FOR READING

READ MORE RELIGIOUS CONTENT ON

vedicprayers.com

VEDIC PRAYERS